अनुत्तरित

सुधा ओम धींगड़ा

सं०- हिन्दी चेतना (अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका) भारत एवं अंतरजाल (इन्टरनेट पत्रिकाओं में) की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ, इंटरव्यू व लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं।
प्रकाशित कृतियाँ : कहानी संग्रह- कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली। कविता संग्रह : धूप से रूठी चाँदनी, सफ़र यादों का।
संपादन : मेरा दावा है (काव्य संग्रह- अमेरिका के कवियों का संपादन)
अन्य संग्रह: 15 प्रवासी संग्रहों में कविताएँ, कहानियाँ प्रकाशित।
स मान : कहानी संग्रह कौन सी ज़मीन अपनी 2012 अ बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार से स मानित। पत्रिका कथाबि ब में प्रकाशित कहानी फन्दा क्यों...? पाठकों के अभिमतों के आधार पर वर्ष 2010 की श्रेष्ठ कहानी और कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत।

दरवाजे पर ही वह ठिठक गया। बंद दरवाजा ोल नहीं पाया। अंदर से बॉस की फोन पर किसी से बातें करने की आवाज आ रही थी।

''सर! कंपनी को परंपरावादी तरीके से चलाने वाला लीडर चाहिए और जॉन वाइट, वह कॉपरेटिव नहीं, बहुत आजाद प्रवृत्ति का है। सर! वह कैथोलिक ी नहीं।''

''नहीं सर! रिपब्लिकन नहीं, मुझे तो अ ी-अ ी पता चला, वह डेमोक्रेट है। जीजी! समझ गए आप। उदारवादी व्यक्ति देश और कंपनी नहीं चला सकता।''

''बॉब कॉलड्वेल, नहीं सर! वह पहले ही अफ्रीकन माइनर होने से काफी पदोन्नति ले चुका है। तरक्की के लिए अब उसे कुछ वर्ष इंतजार करने दें। सर! अपने बुजुर्गों की कुर्बानी को ये लोग कैश करना चाहते हैं।''

''जूली गूजो सर! यहां ी वही बात है महिला होने का ला ा ले रही है। बॉब और जूली दोनों इस पद के काबिल नहीं।''

''और सुमीत?''

अपना नाम सुनकर वह सतर्क हो गया।

''सर! एशियंस ाासकर ाारतीयों को पद देने की जरूरत नहीं होती, हर साल वेतन थोड़ा बड़ा दें, अच्छा बोनस दे दें और बस पद का लालच, दस लोगों का काम कर देंगे। बहुत मेहनती होते हैं। जीजी सर! सुमित के लिए यह सब सुविधाएं मैं अपने बजट से कर सकता हूं।''

''सर! हटा दें इस पद को। यह बड़ी महंगी पोजीशन है, कंपनी के ार्चे बहुत बढ़ जाएंगे और काम तो सुमित से करवा लेंगे, मेरे पर छोड़िए।''

उसे लगा, उसका शरीर शून्य में लटक रहा है। देश की विसंगतियों से ागकर वह यहां आया था। अब वह ागकर जाए तो कहां जाए।

दरवाजा अब ी बंद था और वह दरवाजे के बाहर ही ाड़ा रहने को विवश। उसे बंद दरवाजे ने निरुत्तर कर दिया था।

●●●